प्रसार पुस्तिका संख्याः- DEE/2021/11

पशु टीकाकरण ईलाज से बेहतर

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय
BIHAR ANIMAL SCIENCES UNIVERSITY

प्रसार शिक्षा निदेशालय
बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना-14

पशु टीकाकरणः इलाज से बेहतर

पशुओं में फैलने वाल राग जानलेवा होते हैं। कभी-कभी संक्रामक रोग महामारी के रूप में फैलकर पशुधन का बड़े पैमाने पर नुकसान करते हैं। सर्वविदित है कि रोगों के उपचार ज्यादा श्रेयकर होता है। एक बार रोग लग जाने पर उसका ईलाज करन मे तन और धन का व्यय होता है। उपचारोपरान्त दुग्ध उत्पादन की कमी तथा कमजोर प्रजनन क्षमता के कारण किसानों को काफी आर्थिक क्षति उठानी पड़ती है। अतः इससे बचाव के लिए पशुओं को समय से टीका लगवाना अत्यन्त आव यक है। बिमारियों का टीक पशु के शरीर में प्रवेश कर पशुओं में उस बीमारी के प्रति रोग प्रतिरोधी क्षमता को सुदृढ करते है। परिणामस्वरूप पशु संक्रामक बीमारियों के आक्रान्त होने से बच जाते हैं। पशुपालक अगर ससमय अपने पशुओं का टीकाकरण करवाएँ तो पशुओं को खतरनाक बीमारियों से बचाकर व्यवसाय को लाभप्रद बना सकते हैं।

टीकाकरण के लिए सही समयः

कई संक्रामक बीमारियॉ कुछ निश्चित ;तुओं मे अधिक होती है। अतः टीकाकरण के लिए कुछ विशेष महीनों को अधिक उपयुक्त माना जाता है।

क.सं. रोग	महीना
1. खुर-मुँह पका (पहली खुराक)	फरवरी/मार्च
2. गला घोटु और लंगड़ी बुखार	मई/जून
3. खुर-मुँह पका (दूसरी खुराक)	सितम्बर/अक्टूबर
4. थैलेरियासिस	अक्टूबर/नवम्बर

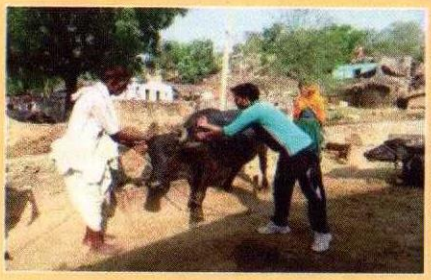

खुर-मुँह पका रोग (FMD) का टीका छः माह के अंतराल पर वर्ष में दो बार एवं गला घोटू रोग (H.S) व लंगरी बुखार (B.Q) का टीका वर्ष में एक बार लगाना चाहिए। संकर नस्ल के पशुओं में थैलेरियोसिस रोग का टीका वर्ष में एक बार लगवाना चाहिए।

टीकोषधी की खुराक विभिन्न कम्पनीयों के टीके एवं पशु चिकित्सक के सलाह पर निर्धारित करना चाहिए।

खुर मुँह पका रोग ग्रसित पशु ईलाज के बाद ठीक तो हो जाते हैं परन्तु उनका दुग्ध उत्पादन कम हो जाता है। साथ ही उनका प्रजनन चक्र भी प्रभावित होता है। ऐसी परिस्थिति में पशुपालक को बहुत आर्थिक हानि उठानी पड़ती है। वर्षा ऋतु में गलाघोंटू रोग एवं लंगड़ा बुखार से पशुओं में मृत्यु की संभावना अधिक रहती है।

आमतौर पर संकर नस्ल के पशुओं में थैलेरियासिस रोग की संभावना प्रबल होती है। इन रागों की भयावहता तथा दुष्प्रभाव को देखते हुए उनकी उपचार की जगह बचाव का तरीका सर्वाधिक उपयुक्त पाया गया है जो टीकाकरण के द्वारा ही संभव है। समय-समय पर कई प्रकार के टीकौसफी की व्यवस्था सरकारी स्तर पर भी किया जाता है। जिसकी जानकारी आप अपने जिला पशुपालन पदाधिकारी / प्रखंड पशुपालन पदाधिकारी से प्राप्त कर सकते है।

बीमारी	टीका का नाम	प्रथम टीका लगाने का उम्र	मात्रा एवं विधि	अंतराल	पशु
खुरहा- मुँह पका	एफ.एम.डी.	4 माह	2 मिली (S/C)	अर्धवार्षिक	गाय,भैंस,भेंड़, बकरी
गलाघोंटू (H.S.)	ऑयल एडजूवेन्ट टीका	हर उम्र में	3 मिली चमड़ी में	वार्षिक	गाय,भैंस,भेंड़, बकरी
लंगड़ी बुखार (ठप्द)	पॉलीवेलेन्ट बी.क्यू टीका	हर उम्र में	2 मिली चमड़ी में	वार्षिक	गाय,भैंस,भेंड़, बकरी
एंथ्रेक्स	एंथ्रेक्स स्पोर टीका	हर उम्र में	1 मिली चमड़ी में	वार्षिक	गाय,भैंस,भेंड़, बकरी
ब्रूसोलोसिस	कॉटन स्ट्रेन -19 टीका	6 माह	5 मिली चमड़ी में	4-5 वर्ष	गाय,भैंस
टिटेनस	टिटैनस टाक्साइड	हर उम्र में	1-2 मिली चमड़ी में	वार्षिक	गाय,भैंस
पी.पी. आर	अटैनूयटेड टिसू कलचर टीका	4 माह	1 मिली चमड़ी में	3 वर्ष मानसून के पहले	भेंड़, बकरी
इन्टेरोटोक्सेमिया	इन्टेरोटोक्सेमिया	3-4 माह	2.5 मिली चमड़ी में	अर्धवार्षिक	भेंड़, बकरी
आई.बी.आर.	आई.बी.आर.	5 माह	2 मिली चमड़ी में	वार्षिक	गाय,भैंस
चेचक Sheep/ Goat Pox	पॉक्स टीका	3- 4 माह	0.5 मिली चमड़ी में	वार्षिक	भेंड़, बकरी

आलेख एवं प्रस्तुतिकरण:- कौशल कुमार, राजकिशोर शर्मा, पंकज कुमार

विशेष जानकारी के लिए सम्पर्क करें:-

निदेशक,प्रसार शिक्षा

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय,पटना-14

Email: deebasupatna@gmail.com (Official), dee-basu-bih@gov.in

Mob.: +91 94306 02962,+91 80847 79374

First Print: 7992457574/ March 2021